19. पुत्रोऽहं पृथिव्याः

इस पाठ में पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से पद्यों का संकलन किया गया है। पर्यावरण संरक्षण में सहायक वृक्ष, पादप, जल, वायु, पृथिवी सभी पवित्र वातावरण से युक्त हों। हम पवित्र मन से यथाशक्ति दूसरों का हित करें, दान दें जिससे सामाजिक पर्यावरण भी शुद्ध और पवित्र हो।

दशकूप...द्रुमः

इस पद्य में सबसे उत्तम वृक्ष को माना है। दस कुंओं के समान बावड़ी, दस बावड़ी के समान तालाब, दस तालाबों के समान पुत्र और दस पुत्रों के समान वृक्ष है।

घृतक्षीर....सदा गृहे

गायों से दूध और घी मिलता है जो जीवन के लिए परमावश्यक है। **घृतक्षीरप्रदाः**=घृत और क्षीर दूध देने वाली, **घृतयोन्यः**=घी की जन्मदात्री (घृतयोनिः=घृतस्य योनिः या सा), **घृतोद्भवाः**=घृतेन जाताः, **घृतनद्यः**= घी की नदियाँ स्वरूप, **घृतावर्त्ता**=घी की भंवरों वाली (दूध निकालते समय दूध में घी की भंवरे नज़र आती हैं। **ऐसी ताः गावः**=वे गउएँ, मे गृहे-मेरे घर में, सदा सन्तु=होवें।

पुण्यापुण्यैः ..... पादपाः पादपा=पौधे, **अरोगाः**=रोगरहित, **पुष्पिताः**=फूलों से युक्त हो जाते हैं। **किनसे? पुण्यापुण्यैः**=पुण्य और अपुण्य कारक। **गन्धैः**=गंधों से, **विविधैः**=अनेक प्रकार के, **धूपैः**='धूपादि से पादप रोगहित और पुष्पित हो जाते हैं, **तस्मात् पादपाः जिघ्रन्ति**=इसलिए सिद्ध होता है कि पौधे सूंघने की शक्ति रखते हैं।

उष्मतो..... विद्यते पौधों में स्पर्श शक्ति भी होती है, गर्मी से वर्ण=रंग, **त्वक्**=खाल, फल और फूल, **म्लायते**=मुरझा जाते हैं। **ग्लायते**=गल जाते हैं, **शीर्यते**=सड़ जाते हैं। **अतः तत्र स्पर्शः विद्यते**=इनमें स्पर्श शक्ति है।

भूमि दानेन..... प्ररोहणे ये लोकाः=जो लोक भूमिदानेन, गोदानेन। **च**=भूमि और गौदान से। **कीर्तिताः**=वर्णित हैं, वे ही लोक मनुष्यों के द्वारा। **पादपानां**=पौधों के। **प्ररोहणे**=उगाने से, **प्राप्यन्ते**=प्राप्त होते हैं।

नाप्सु.....विषाणि वा अप्सु=बहते हुए नदियों के पानी में, **मूत्रं**=मूत्र, **पुरीषं**=मल, **ष्ठीवनं**=थूक, **सम्+उत्+सृज् विधि अन्य पु. ए.व.**:=छोड़े/डाले/जल में ये सब चीजें अपवित्रताएँ नहीं डालनी चाहिएँ, **अमेध्य+आलिप्तम्+अन्यत्+वा**=गली सड़ी चीजों के लिए ऐसी गंदी वस्तुएँ, **लोहितं**=खून, **विषाणि**=विषैले द्रव्य, गैस आदि न डालें।

जीवन.....रक्षितम् सर्वप्राणिनां जीवनं=सब प्राणियों का जीवन जलाशयेषु, **सुनिर्भरम्**=जलाशयों पर ही निर्भर है इसलिए जल, **संरक्षणम्**=रक्षा के योग्य, **वर्धनीयम्**=वृद्धि के योग्य (उचित व्यय करके) है। **रक्षितं जलं**=रक्षित जल ही रक्षा करता है। विषमय जल तो हानिकारक ही होगा।

यत्तेमध्यं ..... पृथिव्याः हे पृथिवि! यत् ते मध्यम्=जो तेरा मध्य स्थान है, **नभ्यम्**=नाभि प्रदेश है, जहाँ से **ऊर्जास्तन्वः**=ऊर्जा प्रदान करने वाले पोषक पदार्थ उत्पन्न हुए हैं। **तासु नः धेहि**=उनमें हमें स्थापित करो, **नः**=हमको, **पवस्व**=पवित्र करो, **भूमिःमाता**=भूमि मेरी माता है और **अहं पृथिव्याः**=मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। पृथिवी ही हमें पोषक तत्त्व प्रदान करके पालती है।

प्रश्नाः

1. अधोलिखितक्रियापदैः सह कोष्ठतः कर्तृपदानि योजयत–

   (क) मम गृहे ..... सदा सन्तु। (गौः/गावः)

   (ख) ..... गन्धैः धूपैः अरोगाः भवन्ति। (पादपः/पादपाः)

   (ग) तत्र पादपेषु ..... विद्यते। (स्पर्शः, पुष्पाणि)

   (घ) पादपानां प्ररोहणे न पुण्यमयाः ..... प्राप्यन्ते। (लोकः/लोकाः)

   (ङ) ..... अप्सु अपवित्राणि वस्तूनि न उत्सृजेत्। (नरः/नराः)

2. संज्ञापदैः सह विशेषणानि योजयत

   (क) ..... गावः। (घृतक्षीरप्रदः/घृतक्षीरप्रदाः

   (ख) ..... पुत्रः। (दशह्रदसमः/दशह्रदसमाः)

   (ग) .....पादपाः। (अरोगाः/पुष्पिताः)

   (घ) ..... लोकाः। (ते/तानि)

   (ङ) ..... जलं रक्षति। (रक्षितम्/रक्षितानि)

3. सन्धिच्छेदं कृत्वा प्रतिपदम् अर्थं लिखत। यथा

   यत्ते यत्+ते= जो तेरा

   (क) यास्ते = ... + ...

   (ख) नाप्सु = ... + ...

   (ग) गन्धैर्धूपैश्च = ... + ...

   (घ) वर्णस्त्वक् = ... + ...

   (ङ) धेह्यभि = ... + ...

   (च) चापि = ... + ...